The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय लघु चित्रकला में मुगल बादशाह अकबर की यात्राएं

Dr. Ritambra Saxena[1]
Dr Saroj Bhargava[2]
[1]Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra
Principal, Junior High School, Basic Shiksha Parishad
[2]Former Principal, Baikunthi Devi Kanya Mahavidyalaya, Agra & Director, Lalit Kala Academy, Agra

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

हुमायूँ, अकबर, यात्रा, तलबार, रहन-सहन

DOI:

10.5281/zenodo.14076845

ABSTRACT

इस संसार में आकर्षण और मनोरंजन के असीम भण्डार हैं। उसमें कहीं अथाह सागर हिलोरें ले रहा है तो कहीं गगन चुम्बी पर्वतों की चोटियाँ हैं कहीं हरी-भरी घाटियाँ हैं तो कहीं विशाल रेगिस्तान हैं । प्रकृति के अनेक प्रकार के रूप संसार के विभिन्न भू भागों पर देखने को मिलते हैं । वहाँ के लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी अनेक रूपता दिखायी देती हैं। प्रत्येक देश की छटा निराली होती है। इस बहुरंगी दुनियां का ज्ञान और आनन्द हमें देशाटन से ही मिल सकता है। देशाटन शब्द 'देश' और 'अटन' दो शब्दों से बना है इसका अर्थ है- देशों का अटन अर्थात देशान्तरों का भ्रमण। अतः स्थान-स्थान पर घूमना, भ्रमणकरना ही देशाटन कहलाता है। पर्यटन एक मानवीय क्रिया-कलाप है। इसी प्रकार की यात्राओं में भावत्मक भाव रहता है।मुगल शैली में पर्यटन परम्पराओं पर अनेकों चित्र प्राप्त हैं, क्योंकि तत्कालीन राजाओं की राजसी रुचियों के कारण उन्हें यात्रा, देशाटन आदि में विशेष रुचि रही, इस प्रकार के चित्र मुगल शैली में बहुत से मिलते हैं । विभिन्न चित्रों में अखबार द्वारा यात्राओं का वर्णन किया गया है।

परिचय

मुगल चित्रकला में पर्यटन

भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर था। उसने भारत में 1526 से 1530ई. तक शासन किया और अपनी आत्मकथा तुजके बाबरी (बाबरनामा) तुर्की भाषा में लिखी है इसमें उसने विहजाद तथा शहमुजफ्फर नामक चित्रकारों का रोचक वर्णन किया है। जो यात्रा वृतान्त चित्रित करने में सिद्धहस्थ थे। बाबर का पुत्र हुमायूँ भी अपने पिता के समान साहित्य

और कला का प्रेमी था । यद्यपि वह ईरान पहुँचा तो वहाँ दो महान चित्रकारों अब्दुरसमद शीराजी और मीर सैयद अली से उसका परिचय हुआ और ये दोनों कलाकार श्रीकलम के कलाकार थे। इन्होंने भी व्यक्ति चित्र और पर्यटन सम्बन्धी चित्र बनाये। और जब 1547 ई. में हुमायूँ ने काबुल और कन्धार पर अधिकार कर लिया तो ये दोनों चित्रकार उसके दरबार में आ गये। इन्हीं से हुमायूँ और अकबर ने स्वयं चित्र निर्माण के गुण सीखें अमीर हमजा की यात्राओं के चित्र सूती कपड़े पर हुमायूँ के संरक्षण में ही बनवाये गये।

अकबर के समय की 'बाबरनामा' की एक सचित्र प्रति 'राष्ट्रीय संग्रहालय' नई दिल्ली में सुरक्षित हैं। इस प्रति के जुज 116 में चौबीस चित्र हैं, जिसमें यात्रा से सम्बन्धित चित्र ही चित्रित हैं। अकबर के समय के चित्रित ग्रन्थों में अनेक यात्रावृतान्त तथा अकबर के जीवन से सम्बन्धित यात्रा घटनाओं को चित्रित किया गया है जिसमें अकबर की अजमेर तीर्थ यात्रा जो फतेहपुर सीकरी से पैदल चलकर की गई थी चित्र संख्या-35, इसके अतिरिक्त एक अन्य चित्र में चित्रकार फारूख वेग द्वारा अकबर का सूरत में प्रवेश दिखाया गया है चित्र संख्या-31, एक अन्य चित्र चित्रकार धनराज द्वारा अकबर अपनी माँ का स्वागत करते हुये चित्र संख्या-33, इस प्रकार अकबर के राज्यकाल में ग्रन्थ चित्रों में भी अनेक यात्रा वृतान्त हैं।

चित्र न.1-सम्राट अकबर गुजरात विजय के उपरान्त जब फतेहपुर सीकरी लौटे

सन 1573 में सम्राट अकबर गुजरात विजय के उपरान्त जब फतेहपुर सीकरी लौटे, तब वहाँ उनका भाव भीना स्वागत किया गया। इस दृश्य को चित्रकार केशू ने चित्रित किया और नरसिंह और जगजीवन ने क्रमशः दायें और बायें भाग में रंग भरे है। यह दृश्य झील के किनारे से देखे गये दृश्य है। चित्र के दायें भाग में अकबर जो एक घोड़े पर सवार है का स्वागत उसके तीन

युवा पुत्रों के द्वारा किया जा रहा है। तीनों पुत्र पैदल चलकर वहाँ तक पहुँते है। और हाथ जोडकर उनका स्वागत कर रहें है। एक पुत्र उनके घोड़े की राकाब को चूम रहा है। तथा अकबर दोनों हाथ आर्शीवाद की मुद्रा में उठाये हुए है। ऊपर दाये भाग में जामी मस्जिद का गुम्मद दिखाई दे रहा है, जब की बाई ओर बाले चित्र में हिरन मीनार दिखाई दे रहीं है।

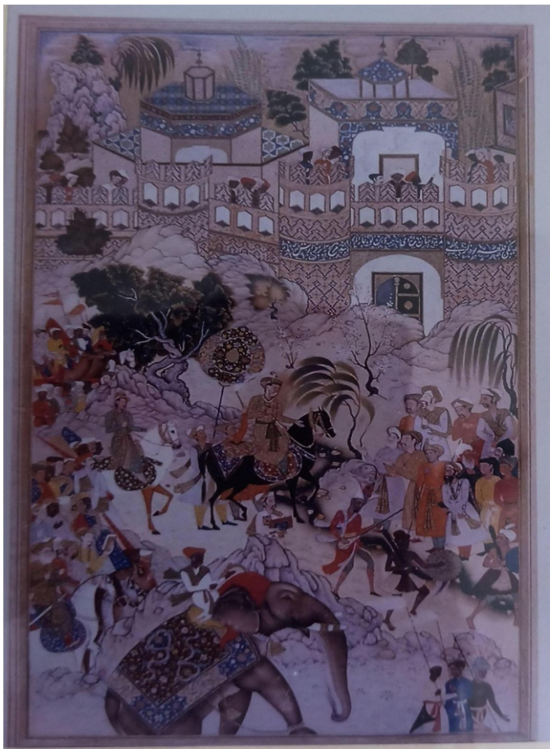

चित्र न 2 - सम्राट अकबर को सूरत में प्रवेश करते हुये

अकबरनामा पर आधारित इस यात्रा चित्र में चित्रकार फारूखवेग ने सम्राट अकबर को सूरत में प्रवेश करते हुये दिखाया है। अकबर एक काले घोड़े पर सवार है। घोड़े पर सजी हुई अलंकृत रंग-बिरंगी झूल पड़ी है। एक सेवक पीछे-पीछे रंग बिरंगा बडा सा पंखा हाथ में लिये हुए पीछे-पीछे चल रहा है। उसके ठीक पीछे एक अन्य घुड़सवार सफेद घोडे पर सवार है। जिसके पैर लाल रंग के है। इस घोड़े पर भी अलंकृत झूल पड़ी हुई है। चित्र की अग्रभूमि में एक हाथी दिखाया गया है, जिस पर बहुत सुन्दर अलंकृत झूल पडी हुई है। हाथी के गले में और पीठ पर घण्टे बधे हुये है। इसके आगे-आगे तीन सेवक लम्बी सफेद पताकायें लिये हुये चल रहे है। अकबर के आगे ढाल और तलवार लिये हुये दो पैदल सैनिक चल रहे है। और एक लाल वस्त्र पहने हुये नुकीली टोपी धारण किये हुए एक तारा बजाता हुआ जा रहा है। अकबर के पीछे और भी कई घुड़सवार एवं पैदल व्यक्ति चल रहे है।इस दल का स्वागत करने के लिये सूरत के अनेक नागरिक झुण्ड बनाकर खड़े हुये है, जो सभी अभिवादन और अभिनन्दन की विनीत मुद्रा में दिखाई दे रहे है। इनकी मुखाकृति मुगलों की मुखाकृति से अलग है। इनकी पगड़ियाँ भी अलग प्रकार की है। रंग-विरंगे परिधानों में सजे हुए दो नागरिक सम्राट अकबर का स्वागत अपने नगर में कर रहें हैं। कुछ भी हो अकबर की सूरत यात्रा का चित्रांकन फारूख बेग द्वारा बड़ी कुशलता से यहाँ किया गया है।

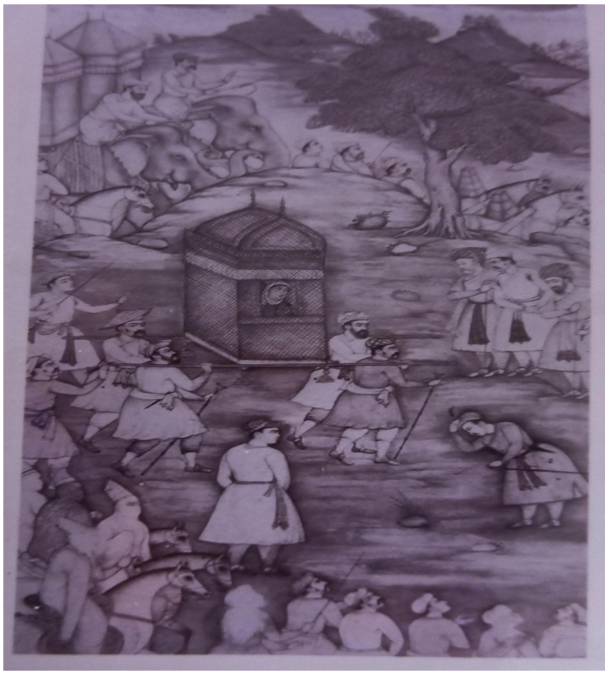

चित्र न 3 - सम्राट अकबर काबुल से आई हुई अपनी माँ का स्वागत कर रहे हैं

इस चित्र में सम्राट अकबर काबुल से आई हुई अपनी माँ का स्वागत कर रहे हैं। उनकी माँ एक जालीदार पालकी में सवार है, चार आदमी अपने कंधों पर उठाये हुये है। अकबर परम्परागत तरीके से अपनी माँ को झुक कर सलाम कर रहे है। वह जमीन पर खड़े हुये है। और आधा झुका हुआ दायाँ हाथ अपनी पगड़ी से लगाकर सलाम आदाब कर रहे है। पालकी में से उनकी माँ झाकती हुई अकबर की ओर देख रहीं है। चित्र की अग्रभूमि में अकबर के हरम की अन्य स्त्रियाँ है जो घोड़े पर सवार है और बुरके से उन्होंने अपना सारा बदन ढक रखा है। उनके सिर पर लम्बी टोपियाँ दिख रहीं है। नीचे की ओर कुछ अन्य सेवक है, जो बड़ी ही उत्सुकता से अकबर की ओर देख रहे है।

अकबर की दाहिनी ओर कुछ अन्य राजपुरूष खडे हुये विनम्र मुद्रा में अकबर की माँ का स्वागत कर रहे है। चित्र में ऊपर की ओर दो हाथी, कुछ घोड़े दिखायी दे रहे है। ऐसा लगता है। कि घोड़ा गाडियों में सामान साथ आया है। ये यात्रा का अंग है। अकबरनामा की घटनाओं पर आधारित इस यात्रा चित्र में चित्रकार धनराज ने विभिन्न प्रकार की पगड़ियों को चित्रित किया है। ये पगडीयाँ व्यक्तियों के वर्गो को अभिव्यक्त करती है। सेवको की पगड़ियाँ एक प्रकार की है, तो राजपुरूषों की दूसरे प्रकार की। अकबर अपनी कलगीदार पगडी से अलग पहचान में आ रहे है।

चित्र न 4

इस यात्रा चित्र' में अकबर अजमेर को पैदल तीर्थ यात्रा करते हुये दिखाये गये है, जिसमें से अकबर के ठीक पीछे एक सेवक दाये हाथ में चबर लिये हुये है। तथा दूसरा सेवक दोनो हाथों से पंखा पकड़े हुये है। तथा अन्य सेवक पीछे-पीछे चल रहे है। पैदल, घुड़सवार सैनिक, हाथी, घोडे, ऊँट, लाल तथा काईया रंग की बग्गी लिये हुये व्यक्ति साथ चल रहे है। ऊँट तथा घोडों की पीठ पैर पर सामान बधा हुआ है। साथ में बल्ली, तम्बू, आदि भी चित्र में दिखाई दे रहे है। इस यात्रा में चित्र में अकबर ने सफेद रंग का जामा तथा लाल रंग का चूड़ीदार पजामा पहन रखा है। तथा कमर में बेलबूटेदार पटका बाध रखा है। सर पर कलंगीदार सफेद रंग की पगडी पहन रखी है। यह एक बहुत ही सुन्दर यात्रा चित्र है।

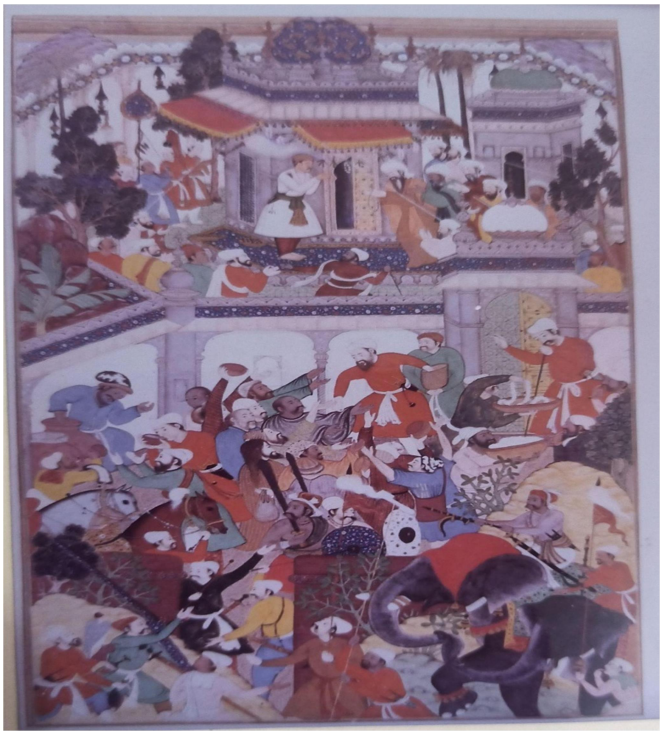

चित्र न 5

प्रस्तुत यात्रा चित्र में अकबर को अजमेर शरीफ में ख्वाजा मुईउद्दीन चिश्ती की दरगाह के परिसर में दोनों हाथों से दुआ माँगते हुए चित्रित किया गया है। अकबर के पीछे उनके सेवक खड़े हुए है। एक सेवक के हाथ में तथा दूसरे के हाथ में धनुषवाण तथा तीरकमान है। उसके आगे वाला व्यक्ति लाल रंग की कोई लम्बी वस्तु पकड़े हुये है । सबसे आखीर वाला सेबक शहनाई पकडे हुये है, तथा अन्य सेवक तथा सैनिक दल नीचे खड़ा हुआ है। यह दरगाह के परिसर का दृश्य है।

दरगाह के बाहर दो हाथी चित्रित है, जिसके ऊपर महावत बैठे हुये है। हाथी के सर पर लाल रंग का स्कार्फ बधा हुआ है। हाथी की पीठ पर हरे रंग की बलबूटेदार झूल है, जो पीले तथा लाल रंग के बोर्डर से सुसज्जित है। दूसरे हाथी की पीठ पर मटमैले रंग की बेलबूटेदार झूल पड़ी हुई है। उस पर भी महाबत बैठा हुआ है। उसके पास एक पैदल सैनिक चल रहा है। जिसने अपने हाथ में एक लम्बी पताका पकड़ रखी है। साथ में सैनिक दल ढाल तलवार लिये हुये है । एक सैनिक के हाथ पर बाज भी बैठा हुआ है। एक व्यक्ति हाथ में नीले रंग की बेलबूटेदार बन्दूक पकडे हुए है। कुछ सैनिक कमर में तलबार भी लगाये हुये है। भूरे तथा सफेद रंग के दो घोड़े भी चित्रित है, जिनकी पीठ पर सामान बंधा हुआ है। यह चित्र बहुत ही सुन्दर एक यात्रा चित्र है।

उपसंहार

देशाटन ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक सफल साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर और पूर्ण ज्ञान देशाटन से होता है उतना अन्य किसी साधन से नहीं होता है । यद्यपि पुस्तकों, समाचार पत्रों तथा

सिनेमा चित्रों के द्वारा भी प्राप्त होता है, किन्तु जितना पूर्ण और सर्वांगीण ज्ञान देशाटन के द्वारा होता है उतना अन्य साधनों से नहीं होता है। वास्तव में किसी स्थान की जलवायु तथा कला संस्कृति, वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा-भाषी,लोगों आदि का पूर्ण ज्ञान उस स्थान के भ्रमण से ही सम्भव है। देशाटन से हमें विभिन्न वस्तुएँ देखने को मिलती हैं।

कला संस्कृति के विभिन्न रूपों का प्रत्यक्ष और पूर्ण ज्ञान देशाटन पर्यटन के द्वारा ही सम्भव होता है। इसके अन्तर्गत बादामी की गुफायें, सित्तनवासल, एलोरा, अजन्ता की गुफायें, ताजमहल आमेर का किला, सिटी पैलेस, अजमेर, अढ़ाई दिन का झोपड़ा आदि कला संस्कृति की देन है जिसका पूर्ण आनन्द हम देशाटन के द्वारा ही लेते हैं।

मुगल चित्रकला में भी पर्यटन परम्परा पर अनेकों यात्रा चित्रों को चित्रकार ने चित्रित किया है अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ आदि के यात्रा चित्रों को चित्रकार ने चित्रित किया है। अकबर ने अपने समय में सबसे अधिक यात्राएँ की हैं। और वह अपने साथ चित्रकारों को भी ले जाते थे । उन्हीं यात्रा चित्रों को चित्रकार ने अपने अन्दर के भावों को चित्रों के माध्यम से चित्रित किया है। उदाहरण के तौर पर अकबर का फतेहपुर सीकरी लौटने पर स्वागत, अकबर का सूरत में प्रवेश, अकबर अपनी माँ का स्वागत करते हुए इसी प्रकार अजमेर में ख्वाजा के यहाँ जहाँगीर, आदि यात्रा चित्रों को चित्रकार ने अपने अन्दर उन्ही भावों को ध्यान में रखते हुए इन यात्रा चित्रों को चित्रित किया है।

BOOKS LIST

1. Brand Michael & Lowry Clenn D. Chandra Moti. —-- Akbar's India Art from Mughal city of victory. Mewar paintings in seventeenth century.
2. Daljeet. —------- Mughal & Deccani paintings
3. Goedden Rumer. —---------- Paintings from Mughal India.
4. Krishnadasa Rai. —--------- Mughal miniatures; Lalit Kala Academy.
5. Leach Linda york. —----- Mughal and other Indian paintings from the chester beathy library.
6. Ray Niharranjan. —----- Mughal court paintings - a study in social and formal analysis.
7. Srivastava Ashok Kumar. —---- Mughal paintings. An interplay of Indigenous and foreign traditions.